श्रीधवल, जयधवल, महाधवल सिद्धान्तग्रन्थ श्रावकोंने पढना चाहिये या नही इस विषयकी चर्चा।

सिध्दान्तरहस्यका अध्ययन श्रावकको मना है, ऐसा श्रीवसुनंदिश्रावकाचारमें तथा सागारधर्मामृतमें लिखा है, जिसका आधार पकडकर मूडबिदरीके श्रीधवल, जयधवल, महाधवल ग्रन्थ श्रावकोंने पढना नही, ऐसी वहांके तरफके कोई लोक शंका बताते हैं । लेकिन वह शंका निर्मूल है, ऐसा प्रमाण मिलता है वसुनंदि श्रावकाचारकी गाथा इस मुजब है ---

दिणपडिम वीरचरिया । तियाळजोयेसु णत्थि अहियारो ।।
सिध्दांतरहस्साणवि । अझ्झयणं देसविरदाणां ।। ३१२ ।।

अर्थ - त्रिकाल संध्यामें, दिवसमें प्रतिमा-योग और वीरासन करनेका तथा सिध्दान्तके रहस्यका अध्ययन करनेको श्रावककू अधिकार नही है ।

सागारधर्मामृतका श्लोक इस प्रकार-

श्रावको वीरचर्याह:प्रतिमातापनादिषु ।।
स्यान्नाधिकारी सिध्दांतरहस्याध्ययनेऽपि च ।।५०।। अ. ७ ।।

टीका - xxx सिध्दांतस्य परमागमस्य सूत्ररुपस्य च प्रायश्चित्तशास्त्राध्ययने पाठे श्रावको अधिकारी न स्यात् ।।

अर्थ - xxx परमागम सूत्ररुप जो सिध्दान्त और प्रायश्चित्तशास्त्र, इनका अध्ययन करनेका श्रावकको अधिकार नहीं है। इससे केवल ग्यारह अंग और चौदह पूर्वके सूत्र पढनेकी श्रावकको अधिकार नही है। लेकिन अंग पूर्वोसे उद्धृत जो धवल, जयधवल, महाधवल इनको पढनेके वास्ते श्रावकको आज्ञा है । देखो सागारधर्मामृतके द्वितीयाध्यायमें लिखा है-

तत्वार्थं प्रतिपद्य तीर्थकथनादादाय देशव्रतं ।
तद्दीक्षाग्रधृतापराजितमहामंत्रोऽस्तदुर्दैवत: ।।
आंगं पौर्वमथार्थसंग्रहमधीत्याधीतशास्त्रांतर: ।
पर्वांते प्रतिमासमाधिमुपयन् धन्यो निहंत्यंहसी ।।२१।।

टीका- xxx किंविशिष्ट: सन् अधीतशास्त्रांतर: अधीतानि विपठितानि शास्त्रांतराणि सौगतादिग्रन्था व्याकरणादीनि च येनासौ। किं कृत्वा अधीत्य पठित्वा। कं अर्थसंग्रहं उध्दारग्रंथमुपश्रुत्य। सूत्रमपि। किं विशिष्टमांगं आचारांगादिव्दादशांगाश्रितं। न केवलमांगं पौर्वं च चतुर्दशपूर्वगतश्रुताश्रितम् । अथशब्दोऽत्र चार्थे ।।

अर्थ- जो श्रावक तीर्थ कहिये, धर्माचार्य अथवा गृहस्थाचार्यके उपदेशसे जीव-अजीवादिक तत्वोंका श्रध्दान करके देशव्रत माने अणुव्रत ग्रहण करता है; गृहस्थकी दीक्षान्वय क्रियाओंमेसे आठ क्रिया धारण करता है; अपराजित पंचमहामंत्रको धारण करता है; कुदेवोंका त्याग करता है; तदनंतर ग्यारह अंगसंबंधी उध्दारगंथसूत्र आदि ग्रन्थोका पढता है; फिर चौदह पूर्वसंबंधी शास्त्रोंको पढता है; इसके बाद वह न्याय, अलंकार, व्याकरण, गणित और बुध्दमीमांसा न्याय आदिके दर्शनशास्त्रोंको पढता है; तदनंतर वह प्रत्येक महिनेकी दोनों अष्टमी और दोनों चतुर्दशीको रात्रीको प्रतिमायोग धारण करनेका अभ्यास करता है। इस प्रकार आठो संस्कार कर वह धन्य और पुण्यवान पुरुष द्रव्य और भाव दोनों प्रकारके पापोंको नष्ट करता है।

फिर भी दीक्षान्वक्रियायोंमेंसे पूजाराध्यक्रिया और पुण्ययज्ञक्रिया गृहस्थीयोंके लिये श्रीमज्जिनसेनाचार्यने महापुराणमे कही है सो इस प्रकार है-

पूजाराध्याख्यया ख्याता क्रियास्य स्यादत: परा ।
पूजोपवाससंपत्या गृण्हतोंगार्थसंग्रहं ।।
ततोन्या पुण्ययज्ञाख्या क्रिया पुण्यानुबंधिनी ।
शृण्वत: पूर्वविद्यानामर्थ सब्रह्मचारिण: ।।

अर्थ - तदनंतर ग्यारह अंगसंबंधी उध्दारग्रंथसूत्र आदि पढता है, इसे पूजाराध्यक्रिया कहते है। फिर ब्रह्मचारी लोगोंसह चौदह पूर्वसंबंधी शास्त्रोको पढता है, इसे पुण्ययज्ञक्रिया कहते हैं।

इस परसे सिध्द होता है कि, सिध्दान्तरहस्य जो सूत्ररुप ग्यारा अंग चौदा पूर्व जिनवाणी श्रुतकेवली पढते हैं, उनके पढनेको श्रावकको अधिकार नहीं है। धवल, जयधवल, महाधवल, इन सिद्धान्त ग्रन्थोंकूं पढनेको हरकत नहीं है। देखिये सूत्र किसको कहते है---

सुत्तं गणहरकहियं तहेव पत्तेयबुध्दकहियं च ।।

सुदकेव्वलिणा कहियं अभिन्नदसपुव्विकहियं च ।।

अर्थ- जो श्रीगणधर देवोंने कहा होय, प्रत्येक बुध्दने कहा होय, श्रुतकेव्वलियोंने कहा होय, तथा अभिन्न दसपूर्वपाठीने कहा होय, उसको सूत्र कहते हैं।

इससे ज्ञात होता है कि श्रीधवल, जयधवल, महाधवल ग्रन्थ पढनेको श्रावकको कोई हरकत नहीं, यदि कोई मनाई करेगा तो उसको ज्ञानावरणीय करमका बंध पडेगा। देखो तत्वार्थसूत्रके छट्ठे अध्यायमें सूत्र लिखा है -

सूत्र - तत्प्रदोषनिन्हवमात्सर्यांतरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शनावरणयो: ।।

टीका- तत्वज्ञानस्य मोक्षसाधनस्य कीर्तने कृते कस्यचिदनभिव्याहरत: अंत: पैशून्य परिणाम: प्रदोष:। कुतश्चित्कारणान्नास्ति न वेद्मीत्यादि ज्ञानस्य व्यपलेपनं निन्हव:। कुतश्चित्कारणाभ्दावितमपि विज्ञानं दानार्हमपि यतो न दीयते तन्मात्सर्यम्। ज्ञानव्यवच्छेदकरणमंतराय:। कायेन वाचा च परप्रकाश्यज्ञानस्य वर्जनमासादनं। प्रशस्त-ज्ञानदूषणमुपणात:। एतेन ज्ञानदर्शनावरणयो: आस्त्रवा: भवंति ।। (सर्वार्थसिध्दौ पूज्यपादस्वामिना)

अर्थ- मोक्षका कारण जो तत्वज्ञान ताका कथन प्रशंसा कोई पुरुष करता होय ताकूं कोई सराहै नाही, तथा ताकूं सुनकर आप मौन राखे, अंतरंग विखे वासू अदेखसा भावकरि तथा ज्ञानकूं दोष लगावनेके अभिप्राय करि वाका साधक न रहे, ताके ऐसे परिणामकूं प्रदोष कहिये। बहुरि आपकूं जिसका ज्ञान होय और कोई कारणकरि कहे, जो नाही है तथा मैं जानू नाही। जैसे काहूने पूछ्या जो हिंसातैं कहा होय? तहां आप जाने है जो हिंसातैं पाप होय है- तहां कोई हिंसक पुरुष बैठ्या होय, ताके भयतैं तथा आपकूं हिंसा करनी होय अथवा आपके अन्य कुछ कार्यका आरंम्भ होय, इत्यादिक कारणनितैं कहे जो, मै तो जानूं नाही; तथा कहे हैं, हिंसामें पाप नाही इत्यादि करि अपने ज्ञानकूं छिपावैं, ताकू निन्हव कहिये। बहुरि आप शास्त्रादिका ज्ञान भले प्रकार पढ्या होय, पैलेकूं शिखावने योग्य होय, तोऊ कोई कारणते शिखावे नाही। ऐसे विचारैं जो पैलेकूं ज्ञान हो जायगा तो मेरी बरोबरी करेगा, इत्यादि परिणामकूं मात्सर्य कहिये। बहुरि ज्ञानका विच्छेद करे, विघ्न पाडे ताकूं अंतराय कहिये। बहुरि परके तथा आपका प्रगट करने योग्य ज्ञान होय ताकू वचनकरि तथा कायकरि वर्जे, प्रगट कर नाही, तथा परकूं कहे ज्ञानकूं प्रकाशै

मति, इत्यादि कहै सो आसादना कहिये। बहुरि सराहनै येाग्य साचा ज्ञान होय ताकूं दूषण लगावै सो उपघात कहिये। ऐसे ये प्रदोषादिक ज्ञान दर्शनावरण कर्मके आस्त्रवके करण हैं।

हिराचंद नेमचंद, सोलापूर

श्रीमान माननीय पंडित गोपालदासजी बरैयाकी सेवामें प्रश्न-

श्री धवल जयधवलादि ग्रंथ हम श्रावकको बाँचने चाहिए या नही?

हिराचंद नेमचंद, सोलापूर

उत्तर

धवल, जयधवल आदि ग्रन्थ जो अंग और पूर्वरुप नही है, उनके वाचनेमें श्रावकको कुछ हरकत नही है, ऐसी हमारी संमति है।

ता २४/८/१६

हस्ताक्षर गोपालदास बरैया

हस्ताक्षर बंसीधर

हस्ताक्षर देवकीनंदन नायक

हस्ताक्षर पन्नालाल बाकलीवाल

इस वखत श्रीयुत पंडित गोपालदासजी जैनसिध्दान्तके अच्छे ज्ञाता हैं। मैं उनके अभिप्रायको प्रामाणिक मान सकता हूं। इत्यलम्।

ता. २०/९/१६ नेमिसागर वर्णी